International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 10, October 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संगीत के विकास में मीड़िया का योगदान

डॉ. संगीता गोरंग
एसोसियेट प्रोफेसर
संगीत विभागाध्यक्षा
के.वी.ए. डी.ए.वी. कॉलेज फार वूमन, करनाल

सारांश

21वीं सदी में मीड़िया ने समाज के सभी वर्गो तक अपनी पहुँच बनाई है। ऐसे में संगीत भी इससे अछूता नहीं रहा है। आज जिस प्रकार संगीत सर्व सुलभ हुआ है। उसका मूल कारण संचार साधनों की भूमिका है। आज संगीत शिक्षार्थियों का एक विशाल वर्ग संगीत के प्रति आकर्षित हुआ है। हर समुदाय, जाति और वर्ग के विद्यार्थी को संगीत को निकटता से जानने और समझने का सुअवसर मिला है। जबकि पहले जन साधारण को संगीत सुनने का अवसर दुर्लभ था। कुछ मीडिया, दूरदर्शन और इलेक्ट्रॉनिक के संसाधन भी आज उपलब्ध है, जिनके कारण जनसाधारण में संगीत के प्रति जागरूकता बढ़ी है।

प्रस्तावना

आधुनिक काल में मीडिया अपने विविध रूपों से सूचना प्रदान कर रहा है ऐसे में विद्यार्थियों में भी संचार के क्षेत्र में कार्य करने का आकर्षण बढ़ा है। संगीत के क्षेत्र में मीडिया का मुख्य ध्येय आज संगीत के प्रचार-प्रसार की स्थिति को समझना है। स्वातंफ्न्योत्तर युग संगीत के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से संगीत का स्वर्ण युग कहा जा सकता है। जिसका श्रेय इस काल में स्थापित मीडिया को जाता है। सैद्धांतिक संगीत का सम्पूर्ण शास्त्र हतें पूर्वकाल से पाण्डुलिपियों के रूप में प्राप्त होती आयी हैं। इस ज्ञान को सैद्धांतिक रूप में विद्वानों, संगीतज्ञों एवं विद्यार्थियों को मुद्रित माध्यमों (प्रिंट मीडिया) के द्वारा सम्भव हो पायी। प्रकाशन की सुविधा की प्राप्ति होते ही विविध संगीत ग्रंथों, पुस्तकों, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों आदि में शास्त्रीय संगीत से सम्बन्धित लेख छपने लगे और जनसाधारण भी इसके शास्त्र से अवगत होने लगा। पहले चल कला के बार प्रदर्शन के पश्चात् उसे दोबारा सुनने या देखने की कोई सुविधा नहीं थी परन्तु आधुनिक युग में हुए तकनीकी विकास ने जन्म दिया इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों (इलेक्ट्रॉनिक मीडिया) को।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 10, October 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्राचीनकाल से ही संगीत कला गुरु शिष्य परम्परा के माध्यम से फलीभूत हो रही है, लेकिन आज के वैज्ञानिक युग में इसके सीखने, सिखाने प्रदर्शन आदि सभी क्षेत्रों में परिवर्तन आया है। संगीत के इतिहास में वैज्ञानिक उपकरणों का पर्दापण एक प्रकार से क्रान्तिकारी घटना के रूप में सिद्ध हुआ है। फिर वे रेडियों, टी.वी., वी.सी.डी., कैसेट रिकार्ड प्लेयर और इन्टरनेट आदि ही क्यों न हो। कम्प्यूटर हमारी आज की सबसे बड़ी आवश्यकता बन गया है। अन्य क्षेत्रों के समान संगीत में भी इसका उपयोग महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है।

आज संगीत के कलेवर में भी पर्याप्त मात्रा में वृद्धि हुई है। गायन के क्षेत्र में शास्त्रीय संगीत भजन, गजल, लोकसंगीत की अनेक विधाएँ प्रचलित हुई हैं। इसी प्रकार तन्त्र वाद्य मे सितार, गिटार, सरोद, वायलिन और कैसियो जैसे अनेक वाद्यों को सीखने-सिखाने की व्यवस्था देखी जा सकती है। इसी प्रकार अवनद्ध वाद्यों में तबला, पखावज, ढोलक और विदेशी ड्रम का भी खूब प्रचलन हुआ है।

ग्रामोफोन-वर्तमान समय में संगीत की बहुमूल्य निधि को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से ध्वन्यांकन करने हेतु अनेक उपकरण हमारे पास उपलब्ध हैं। जिसके माध्यम से आज से लगभग 100 वर्श पूर्व तक के क्रियात्मक संगीत का इतिहास प्रामाणिक रूप से उपलब्ध है।

रेडिया-यह श्रव्य जनसंचार का माध्यम है, जिसमें सम्पूर्ण विश्व की सूचना, ज्ञान-विज्ञान, कला, संगीत आदि को जनसाधारण के लिये बड़ी सरलता से उपलब्ध कराया गया है। इसके निम्नलिखित प्रकार है-सेटेलाइट रेडियो, वेब रेडियो, ब्रांडबैड रेडियो, विजुअल रेडियो, कम्यूनिटी रेडियो, कैम्पस रेडियो, शैक्षणिक रेडियो, एफ.एम. रेडियो तथा ए.एम. रेडियो इत्यादि।

आकाशवाणी प्रसारण में संगीत का विशिश्ट स्थान रहा क्योंकि संगीत एक श्रव्य विधा है जो ध्वनि में निहित है। इसीलिए संगीत और संगीतज्ञों को देश के कोने-कोने तक पहुँचाने में आकाशवाणी ने एक सशक्त

Vol. 8 Issue 10, October 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

माध्यम के रूप में अपनी अहम भूमिका निभाई। आज आकाशवाणी की सहायता से भारतीय शास्त्रीय संगीत घर-घर तक पहुँच गया है।

दूरदर्शन-यह संचार का सर्वाधिक प्रभावशाली अपेक्षाकृत नया माध्यम है। ध्वनि के साथ चित्रों को प्रेषित करने के कारण इसमें मानवीय संवेदन एवं व्यक्तित्व को सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया जाता है। जिससे दर्शक पर इसका सीधा प्रभाव पड़ता है। इस दृश्य श्रव्य माध्यम की कोई भौगोलिक सीमा न होने के कारण इसे सार्वभौमिक माध्यम भी कहा जाता है। दूरदर्शन के आविष्कार से संचार जगत में युगान्तकारी परिवर्तन आया है।

निजी टेलीविजन चैनल एवं केबल का विकास-भारत में 1991 में जब अमेरिकी चैनल सी.एन.एन. ने खाड़ी युद्ध की लाइव कवरेज की तो भारतीय केबल आपरेटरों ने इसका प्रसारण किया। उस समय तक देश में कोई भी भारतीय निजी टेलीविजन चैनल प्रसारित नहीं होता था। इस प्रकार उपग्रह प्रसारण के क्षेत्र में निरन्तर विकास होता गया और जी.टी.वी., एल.टी.वी. स्टार समूह आदि निजी चैनलों का 20वीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों एवं 21वीं शताब्दी के प्रारम्भ में तीव्रता से विस्तार हुआ। जिसमें गीत-संगीत और मनोरंजन की प्रचुर सामग्री उपलब्ध होती है। वर्तमान समय में सोनी, सब, कलर्स स्टार, जी टीवी आदि लोकप्रिय चैनल्स हैं। इसके अतिरिक्त केबल द्वारा स्थानीय और प्रादेशिक स्तर पर भी कुछ निजी चैनल्स द्वारा कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है।

टेपरिकार्डर-पिछली शताब्दी की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। ध्वनि को ग्रामोफोन में रिकार्डिंग करना इतना आसान नहीं था किन्तु टेपरिकार्डर के आविष्कार से और इसकी सहज उपलब्धि से हर संगीत जिज्ञासु को अपनी ध्वनि रिकार्ड करने तथा उसे आंकने का एक आसान साधन उपलब्ध हो सका। आजकल टेपरिकार्डर में संगीत के कार्यक्रम को सुनने का आनन्द बढ़ गया है क्योंकि गायन के साथ तबले पर बज रही ताल, हारमोनियम और तानपूरों की ध्वनि को स्पीकर्स के माध्यम से अलग से सुना जा सकता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 10, October 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वीडियो-इस माध्यम द्वारा टी.वी. पर प्रस्तुत कार्यक्रमों को देखकर साथ ही रिकार्ड करना भी सुलभ हुआ। इसमें भी टेपरिकार्डर की तरह चित्र को पहले विद्युत तरंगों में बदलकर तथा फिर उसको मैग्नेट की शक्ति में परिवर्तित करके रिकार्ड करना आरम्भ किया।

वी.सी.पी. और वी.सी.आर-इन उपकरणों के द्वारा रिकार्ड हुए कार्यक्रम को टेलीविजन पर देखा और सुना जा सकता है। साथ ही इसमें दूरदर्शन पर आ रहे कार्यक्रम को रिकार्ड भी किया जा सकता है। टेपरिकार्डर द्वारा तो केवल कार्यक्रम को सुना ही जा सकता है किन्तु इन उपकरणों के माध्यम से कार्यक्रम को देखना और सुनना दोनों सुलभ हो गया। इस प्रकार प्रत्यक्ष रूप से अपने कलाकार को देखकर, सुनकर प्रतीत होता है जैसे संगीत सभा या समारोह ही हो रहा हो।

कम्प्यूटर-आज कम्प्यूटर हमारे जीवन का अभिन्न एवं महत्वपूर्ण अंग बन चुका है। संगीत के क्षेत्र में भी इसकी उपयोगिता सर्वविदित है। कम्प्यूटर का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत एवं व्यापक होने के कारण इसका विस्तृत वर्णन करना अत्यन्त कठिन है।

काम्पैक्ट डिस्क (सीडी)-आज रिकार्ड प्लेयर की यह तकनीक ही अधिक विकसित है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसे अधिक समय तक सुरक्षित रखा जा सकता है। इसी प्रकार वाद्यों तथा कलाकारों की आवाज को इसमें अति सूक्ष्म एवं स्पष्टता से सुना जा सकता है।

मोबाइल फोन-मल्टीमीडिया तकनीक का जैसे-जैसे विकास हुआ मोबाइल फोन में भी इस तकनीक का प्रयोग किया जाने लगा। वर्तमान समय में कम्प्यूटर की लगभग सभी सुविधा मोबाइल फोन से प्राप्त होने लगी है। जैसे-संगीत सामग्री को संग्रहित करके अपनी इच्छानुसार सुनना एवं पढ़ना। किसी भी कार्यक्रम की वीडियो रिकार्डिंग्स तथा फोटोग्राफ्स को संग्रहित करके रखना तथा मिटाना व भेजना। इण्टरनेट की सभी सुविधा आदि। ब्लूटूथ सुविधा के माध्यम से संगीत सामग्रियों का आदान-प्रदान भी बड़ी सरलता से किया जा सकता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 10, October 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

यू.एस.बी. फ्लैश ड्राइव (पेनड्राइव)-पेन ड्राइव आमतौर पर रिराइटेबल होते हैं। इसकी अधिकतम संग्रहण क्षमता 246 जी.बी. तक हो सकती है। इस छोटी सी पेन ड्राइव में हजारों गीतों को, संगीत की अनेक बंदिशों तथा टैक्स्ट सामग्री को व्यापक स्तर पर संग्रहित और सुरक्षित करके रखा जा सकता है। डिजिटल आडियो, वीडियो फाइलों को एक कम्प्यूटर से दूसरे कम्प्यूटर में किसी भी अन्य फाइल की तरह ले जाया जा सकता है और एक संगीत मीडिया प्लेयर पर चलाया जा सकता है।

इन्टरनेट-इसकी सहायता से हम विश्व की किसी भी विशय से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी किसी भी स्थान पर बैठकर प्राप्त कर सकते हैं। संगीत से सम्बन्धित किताबें तथा संगीत की जितनी भी पुरानी और नई सूचनाएँ हैं उन सभी की जानकारी इन्टरनेट मिनट भर में हमें देता है। शिक्षा के सभी क्षेत्रों विज्ञान, साहित्य, मनोविज्ञान, तकनीकी, चिकित्सा और अब संगीत कला में इन्टरनेट का प्रयोग बढ़ता ही जा रहा है। सरकारी, गैर-सरकारी विश्वविद्यालयी पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं और शोध लेखों की सूचना तथा घर बैठकर संगीत सम्बन्धित सभी प्रकार की सूचना इन्टरनेट से प्राप्त हो जाती है। संगीत शिक्षण को विश्वव्यापी बनाने तथा अन्य विषयों की तरह संगीत का भी दूर तक फैलाव करने में इन्टरनेट की सेवाएँ अद्भुत है। जिसके अन्तर्गत ई-मेल, आनलाइन इन्फोरमेशन, वीडियो कान्फ्रेन्सिंग इत्यादि आती हैं।

इन माध्यमों के अंतर्गत ग्रामोफोन, आकाशवाणी, सिनेमा, दूरदर्शन, ध्वनिक्षेपक, ध्वनिमुद्रक, संगणक अर्थात् कम्प्यूटर आदि साधनों के माध्यम से शास्त्रीय संगीत के क्रियात्मक पक्ष को अत्याधिक प्रोत्साहन मिला। आकाशवाणी, ग्रामोंफोन रिकार्डस आदि ने श्रव्य माध्यम के रूप में संगीत का प्रचार किया तो दूरदर्शन, सिनेमा, कम्प्यूटर आदि के माध्यम से दृश्य-श्रव्य दोनों प्रकार से संगीत के प्रचार में सहायता मिली। इन माध्यमों के द्वारा कलाकारों और उनसे जुड़े वाद्यों को लोकप्रियता मिली तथा व्यावहारिक या क्रियात्मक पक्ष को स्थायित्व मिला और कलाकारों एवं संगीत के सम्मान तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई।

आज अन्य कलाओं के समान संगीत कला को भी स्थायित्व मिल पाया है। आकाशवाणी, दूरदर्शन के कारण शास्त्रीय संगीत को घर बैठे सुनना सुलभ हो गया। सिनेमा में प्रयुक्त शास्त्रीय संगीत पर आधारित गीत

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 10, October 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सामान्यजनों को भी शास्त्रीय संगीत की ओर आकर्षित करने लगे हैं। इस प्रकार विभिन्न माध्यमों के महत्वपूर्ण योगदानों को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि भविष्य में संगीत को उच्च स्तर तक पहुँचाने में मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

मीडिया का अर्थ-माध्यम तथा जनसंचार है। मुद्रित माध्यम और इलेक्ट्रॉनिक माध्यम जनसंचार माध्यमों की दो शाखाएँ मानी जा सकती हैं। जनसंचार साधन का अर्थ है-सूचना और विचारों का प्रसार करने वाला साधन। सूचना के अभाव में व्यक्ति अपने समाज, देश और सम्पूर्ण विश्व से कट जाता है। अपने विचारों का आदान-प्रदान करने या अपने विचारों को दूसरों तक संप्रेषित करने के लिए मीडिया एक सरल माध्यम है। मीडिया रेडियो, टी.वी. तथा प्रैस के रूप में जनता के साथ सतत सम्पर्क साधे रखता है। अतः मीडिया सूचनाओं को प्राप्त करने तथा प्रेषित करने में एक सेतु का कार्य करता है। बृहत् पारिभाषिक शब्द संग्रह (मानविकी और सामाजिक विज्ञान) मे प्रिंट का अर्थ-मुद्रण, छपाई, छापना प्राप्त होता है। मीडिया को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है-मुद्रित माध्यम (प्रिंट मीडिया) और इलेक्ट्रॉनिक माध्यम (इलेक्ट्रॉनिक मीडिया)।

मुद्रित माध्यम (प्रिंट मीडिया)-समाचार पत्र, पत्र-पत्रिकाएँ, पुस्तकें इत्यादि मुद्रित माध्यमों के अन्तर्गत आती हैं अर्थात् वे सभी चीजें जो मुद्रणालय (प्रिंटिंग प्रैस) में छपती हैं, मुद्रित माध्यम कहलाती हैं। संचार की प्रारम्भिक अवस्थाओं में सूचनाओं का आदान-प्रदान मौखिक रूप से किया जाता था।

इलेक्ट्रॉनिक माध्यम (इलेक्ट्रिॉनिक मीडिया)-आकाशवाणी, दूरदर्शन, सिनेमा, कम्प्यूटर इत्यादि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अन्तर्गत आते हैं। जैसे-जैसे मीडिया का विकास होता रहा वैसे-वैसे संगीत से जुड़े कलाकारों एवं उनसे जुड़े वाद्यों को लोकप्रियता मिलने लगी और संगीत को इन माध्यमों द्वारा आश्रय प्राप्त होने लगा। इन माध्यमों से संगीत के प्रचार-प्रसार के मार्ग खुल गये और कलाकारों एवं संगीत के सम्मान तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई। तत्पश्चात् संगीत के जनव्यापी प्रचार के लिए मुद्रित और इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का प्रयोग किया जाने लगा। इस प्रकार मीडिया द्वारा संगीत शिक्षण का तीव्र गति से विकास हुआ और संगीत के प्रचार-प्रसार का मार्ग प्रशस्त हुआ।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 10, October 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

निष्कर्ष

आज के परिप्रेक्ष्य में जहाँ असीमित जनसंख्या का विस्तार हुआ वहीं संगीत के प्रचार-प्रसार के लिए मीडिया के सहयोग की आवश्यकता प्रतीत होने लगी। मीडिया की उत्पत्ति से वृहद परिवर्तन आया। मीडिया ने न केवल संगीत के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया अपितु इसको लाखो लोगों तक पहुँचाने में भी बड़ा सहयोग दिया। संगीत को साधारण जनता तक पहुँचाने का यह सबसे सरल और उत्तम माध्यम सिद्ध हुआ। मीडिया के माध्यम से ही जनता संगीतज्ञों के सम्पर्क में आने लगी। लोगों तक सरलता से संगीत सम्बन्धी जानकारी और सूचनाएँ पहुँचाने का यह एक सबल एवं समृद्ध साधन सिद्ध हुआ।

संदर्भ सूचीः

मित्तल अंजली, "भारतीय सभ्यता, संस्कृति एवं संगीत", पृ.सं. 58, कनिष्क पब्लिशर्स,
डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली-110002, संस्करण-2016

चंद डॉ. हुकुम, "आधुनिक काल में शास्त्रीय संगीत", पृ.सं. 28, ईस्टर्न बुक लिंकर्स,
दिल्ली-7, संस्करण-1998

परांजपै, शरच्चन्द्र, भारतीय संगीत का इतिहास

उत्तर भारतीय संगीत का इतिहास अनुवाद डॉ. अरूण कुमार भातखण्डे सेन

श्रीवास्तव, हरीशचंद्र, संगीत निबंध संग्रह

मिश्रा, शंकरलाल, संगीत निबंध संग्रह